एक इतिहास का शब्द

भारत में कोसी नदी का नाम कौन नहीं जानता। पौराणिक काल के विष्वामित्र की बहन कौषिकी नाम से इसका तार जुड़ा हुआ है। नेपाल से बहती हुई कोसी की धारा भारत के उत्तर बिहार के सुपौल जिला में प्रवेष करती है। पिछली शताब्दी के 50 के दषक में सैकड़ों साल से उन्मत बहती कोसी की धारा को जबरन मोड़कर इस पर तटबंध बना दिया गया। तटबंध बनने के कुछ वर्ष उपरांत तटबंध के भीतर बसने वाले 380 गांव के करीब दस लाख लोग कमोवेस बाढ़ की बीभिषीका झेलते आ रहे हैं। प्रत्येक वर्ष जानमाल की हानि के साथ गांव का भूगोल भी बदल जाता है। कई गांव आंषिक और कई गांव पूर्ण रुप से नष्ट होते हैं। कई गांव कई बार उजड़े और पुनः कहीं बसे। प्रत्येक वर्ष बाढ़ की बिभिषिका के उजड़े अतीत लोग भूल नहीं पाते, लेकिन वर्तमान विवषतापूर्ण जीवन चक्र में इतिहास कहने और सुनने का किसको समय ...!

मेघ पाईन अभियान केवल जल व स्वच्छता के मुद्दे पर रुढ़ीवादी कार्यपद्धति में विष्वास नहीं रखता। खास परियोजना कर्मी की तरह अपनी गतिविधि तक ही स्वयं को सीमित रखना अभियान का व्यवहार नहीं है। अभियान कार्यकर्ता लोगों के अर्न्तमन को सुनने व समझने का प्रयास भी करता। यह अलग बात है कि इसका भी केन्द्र विन्दु जल व स्वच्छता ही रहता। कार्यकर्ताओं के इस भावना व व्यवहार से कार्य करने से कई लोग ऐसे मिलते जो अपने अतीत, पड़ोस व गांव के अतीत का विस्तृत व्यौरा पेष कर स्वयं को गौरवान्वित समझते। इसी संदर्भ में सितम्बर 2010 के अन्त में बिहार के सुपौल जिलार्न्तगत सुपौल प्रखंड के बलवा पंचायत के अन्तर्गत सुकैला गांव का अतीत सामने आया। कोसी तटबंध बनने के उपरान्त यह गांव भी दोनो तटबंध के बीच में है। सुपैल जिला मुख्यालय से करीब 12 किमी पर अवस्थित यह गांव कईवार उजड़ चुका है। पूर्व में कईवार गांव का भूगोल भी आंषिक रुप में बदला, लेकिन 2010 में बाढ़ की बिभिषिका ने कई गांव के अस्तित्व को ही समाप्त कर दिया। इसी कड़ी में सुकैला गांव भी है। वर्तमान में सुकैला गांव का भी अस्तित्व नहीं रहा। गांव की जमीन का अब कोई अतापता नहीं ...! गांव के विस्थापित लोग इधर उधर अपने सुविधानुसार कहीं किसी तरह आश्रय लिये हुए हैं। चूंकि गांव का अस्तित्व आज मिट चुका है इसलिये गांव के इनेगिने लोग गांव के इतिहास के वारे में चिंतित व संवेदनषील हैं। यही चिंता व संवेदनषीलता सुकैला गांव के 50 वर्षीय श्री मनोहर यादव एवं 58 वर्षीय श्री फुलेन्द्र सिंह आदि ने रेखंकित किया।

कई ग्रामीणों के बीच दोनों कहते हैं कि अंग्रेज के आने के पूर्व तक सुकैला पैगमपुर नाम से प्रसिद्ध था। यह राजा का गढ़ था। राजा इसी स्थल से अपने राजकाज का संचालन करते थे। उसी राजबंष में सहादन अली खाँ नामक राजा हुए। शायद इसका कार्यकाल आज से करीब 200–250 वर्ष पहले था। अली खाँ के वारे में कहा जता है कि वह क्रूर प्रवृति के थे। उन्होंने अपने राज्य के अधीन प्रजा पर अत्याचार किया। उनके विरुद्ध कई वार विरोध के स्वर भी उठे थे, लेकिन मुगल सल्तनत के सर्मथन से वह सदैव राज्य करता रहा। राजदरवार के प्रसंग में एक रोचक कहानी कही जाती है।

एक समय राजदरवार लगी थी। सभी दरबारी मंत्री उपस्थित थे। किसी कारण से मजिरा वजाने वाला उपस्थित नहीं था। फलस्वरुप संगीत कार्य में बाधा पर रही थी। राजा को उदास देखकर रानी स्वयं दरबार में उपस्थित होकर मजिरा बजाने लगी। इस पर वहां के एक दरवारी ने राजा से कहा कि –

श्शहर पैगमपुर मंगावारी, ढ़ाव घाट खुखनाहा ।
देखलों राजा तोरो राज, ढ़िढा पर मजिरा बजा ।।श

उपरोक्त लोकोक्ति का आषय है कि पैगमपुर एक सुन्दर सा नगर था। मंगा एक जगह था, जो बगीचे के समान था। ढ़ाव नदी का खुखनाहा घाट प्रसिद्ध था, जो काफी सुन्दर था। राजा संकीर्ण और कठोर प्रवृति रहने के बाबजूद रानी को राजदरवार आने से नहीं रोक सका। रानी वहां आकर मजिरा बजाने लगी जबकि वह गर्भवती थी। उस समय किसी इस्लामी राजा की गर्भवती रानी को महफिल में आकर मजिरा बजाना राजा के लिये अपमान था, और इसे प्रजा ने राजा के कमजोर पक्ष को उजागर कर उक्त लोकोक्ति को प्रचारित किया कि राजा तुम्हारी पत्नी को भी देख लिया और आने वाले समय में तुम्हारे राज को भी देख लेंगे। कहने का अर्थ है कि तुम्हारी राजसत्ता का अंत कर देंगे। इसी के बाद राजा के विरुद्ध बड़ा संघर्ष हुआ जिसमें वे पराजित हुए। इसके उपरान्त दरभंगा महाराज के अधीन पैगमपुर राज को कर दिया गया। महाराजा ने ही इसकी समृद्धि, सुन्दरता और प्राकृतिक प्रचुरता के कारण पैगमपुर का नाम सुकैला रखा। प्रमाण के तौर पर दोनों व्यक्ति का दावा है कि 1902 ई0 के सर्वे में इसका नाम पैगमपुर ही था। 1902 ई0 के बाद अंग्रेज द्वारा इसे दरभंगा महराज के नाम से कर दिया गया। राजा सहादन अली खाँ के पूर्व सभी राजा ने उदारतापूर्ण राज्य किया। सुन्दर राज्य व्यवस्था के कारण ही इस गांव का नाम सुकैला पड़ा था। संभव है कि सुकैला राज्य का एक मुख्य दरवाजा वर्तमान सुपौल नगर रहा हो क्योकि सुपौल नगर का अर्थ सुन्दर दरवाजा से भी लिया जाता है।

वर्तमान में आज दोनों तटबंध के भीतर का जनजीवन तो तबाह है ही। उसका भूगोल तो बदलना उसका नियति बन चुका है। लेकिन क्या सुकैला ऐसे अनेको गांव जो इतिहास के गर्भ से बहुत कुछ कहना चाहता है क्या वह शब्द भी अपना अस्तित्व खो देगा...? मेघ पाईन अभियान के काग्रकर्ता ने पानी के बहाने एक गांव के इतिहास के थोड़े से अंष को छुआ है, लेकिन प्रकृति के गोद में समाए घनेरो इतिहास को जानने व संग्रहित करने का कार्य समाज व सरकार का है।